02 अगस्त, 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 09
अगस्त (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)
संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में....

एक मुलाकात : नवपल्लवों के साथ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 46वें बैच के नवागन्तुक विद्यार्थियों का परिचय सम्मेलन कार्यक्रम 17 जुलाई 2022 को **'नवपल्लव'** के रूप में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

तीन सत्रों में आयोजित इस समारोह के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल व तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने की।

इस सम्मेलन में विद्यार्थियों को श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री बण्ड, डॉ. अनेकान्तजी दिल्ली, पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री (Online) का उद्बोधन स्वरूप मंगल आशीष प्राप्त हुआ; इसके अतिरिक्त डॉ. प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संजयजी सेठी, श्री अश्वनीजी दिल्ली, श्री अखिलजी USA, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री भारिल्ल, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अमनजी शास्त्री, पण्डित अखिलजी शास्त्री एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल उपस्थित रहे।

इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ के नवागन्तुक 50 छात्रों ने तत्त्वप्रचार की भावना व्यक्त करते हुए अपना परिचय दिया। साथ ही शेष 4 कक्षा के 4-4 छात्रों ने आकर अपनी कक्षा के प्रत्येक छात्र का परिचय देते हुए उनकी उपलब्धियों से परिचित कराया। इसी बीच शास्त्री तृतीय वर्ष से अरविन्द जैन, खड़ैरी ने नवपल्लवों के लिए प्रेरणा स्वरूप कविता प्रस्तुत की।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी के निर्देशन में अमन जैन खनियांधाना, नमन जैन हटा, दीपक जैन मजगुवाँ एवं आदित्य जैन फुटेरा (शास्त्री तृतीय वर्ष) के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

1977 में संस्थापित टोडरमल महाविद्यालय का...

46वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : महाविद्यालयों में शिरोधार्य श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय अपने गौरवमयी इतिहास तथा अपने उद्देश्यों की अड़िगता के साथ ४६वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसी उपलक्ष्य में दिनांक २४ जुलाई २०२२ को महाविद्यालय के **46वें स्थापना दिवस** के मंगल प्रसंग पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में एक विशिष्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समारोह महाविद्यालय के स्वप्नदृष्टा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इसके अतिरिक्त श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का समागम प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन संदेश जैन, दिल्ली तथा मंगलाचरण चेतन जैन, गुढ़ाचन्द्रजी ने किया। (शेष पृष्ठ 7 पर...)

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों तले...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक २३ जुलाई २०२२ को **'देव-शास्त्र-गुरू : एक विहंगावलोकन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री, जयपुर ने की। सत्र का संचालन दिव्यांश जैन, सागर व सौरभ काले-गोरे, केज एवं मंगलाचरण जिनय जैन, इंदौर ने किया। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से क्रिश जैन, मुम्बई व उत्कर्ष जैन, कानपुर तथा उपाध्याय वरिष्ठ से संयम जैन, करेली चुने गए।

35 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

सम्यक्चारित्र का अन्यथा स्वरूप...

बाह्यक्रिया पर तो दृष्टि है और परिणाम सुधरने-बिगड़ने का विचार नहीं है। हमें क्या हो गया है? कौन कैसे उठ रहा है, कौन कैसे बैठ रहा है, कौन कैसे चल रहा है – इस पर ही दृष्टि है; लेकिन अन्दर में क्या चल रहा है, इस पर दृष्टि नहीं है। यदि कोई कहे कि हम शास्त्राभ्यासी जीवों की दृष्टि तो परिणामों पर ही रहती है। तो पण्डितजी अगले ही वाक्य में कहते हैं कि परिणामों पर दृष्टि रहने पर भी परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय में जो वासना है, उसका विचार नहीं करते। और फल तो अभिप्राय में जो वासना है, उसका लगता है। क्रिया की तरफ दृष्टि हो तो परिणाम नहीं देखता और यदि परिणाम को सम्भालने की बात करता है तो अभिप्राय का विचार नहीं करता।

कितने ही जीव कुलक्रम से, देखा-देखी या मान-लोभादिक से प्रवृत्ति करते हैं, उनके तो धर्मबुद्धि ही नहीं है तो सम्यक्चारित्र कहाँ से हो? क्योंकि कषायभाव होने पर सम्यक्चारित्र नहीं होता।

कितने ही जीव ऐसा कहते हैं कि जानने में क्या रखा है कुछ करने से फल लगता है, जानने-जानने से तो कुछ होता नहीं। पण्डितजी कहते हैं कि तत्त्वज्ञान के बिना महाव्रत का आचरण भी मिथ्याचारित्र नाम पाता है। सच्चे श्रद्धान व ज्ञान के बिना कितना ही महान आचरण का पालन करे तो भी वह मिथ्या आचरण है। इसलिए पहले तत्त्वज्ञान का उपाय करना पश्चात् कषाय घटाने के लिए बाह्यसाधन व्रतादिक अंगीकार करना।

कितने ही जीव विषय-कषाय की वासना का विचार किए बिना ही बड़ी-बड़ी प्रतिज्ञा धारण कर लेते हैं। फिर जैसे-तैसे खींचतान करके प्रतिज्ञा के परिणाम से दुःखी होते हुए उसे पूरी करते हैं। जैसे – प्यास लगने पर प्रतिज्ञानुसार पानी तो नहीं पीता; लेकिन गले पर गीली पट्टी लगाता है, बर्फ लगाता है। इसप्रकार रोगियों की भाँति काल गँवाता है। तथा कितने ही जीव परिणाम लगाने के लिए अनेक उपाय करते हैं। जैसे उपवास किया और मन न लगे तो खेल खेलने लग जाता है, जुआदि व्यसनों में लग जाता है। सुगम विषय छोड़कर फिर विषम विषयों का उपाय करे; सो ऐसे कार्य में तो तीव्रराग होता है। इसलिए जैसी प्रतिज्ञा सधती जानो वैसी प्रतिज्ञा लेना।

इसप्रकार कितने ही पापी जीव खेल-खेल में पहले प्रतिज्ञा लेते हैं बाद में दुःखी होकर छोड़ देते हैं, सो प्रतिज्ञा भंग करने का तो महापाप है।

अब यहाँ पण्डितजी प्रतिज्ञा लेने का विधान व प्रक्रिया बतलाते हैं – जैनधर्म में प्रतिज्ञा (न) लेने का दण्ड तो है नहीं। जैनधर्म में तो ऐसा उपदेश है कि पहले तो तत्त्वज्ञानी हो; फिर जिसका त्याग करे उसका दोष पहिचाने; त्याग करने में जो गुण हो उसे जाने; फिर अपने परिणामों को ठीक करे; वर्तमान परिणामों के भरोसे ही प्रतिज्ञा न कर बैठे; भविष्य में निर्वाह होता जाने, तो प्रतिज्ञा करे; तथा शरीर की शक्ति का व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावादिक का विचार करे – इसप्रकार विचार करके फिर प्रतिज्ञा करनी चाहिए। वह भी ऐसी करनी चाहिये, जिससे प्रतिज्ञा के प्रति निरादर भाव न हो, परिणाम चढ़ते रहें। ऐसी जैनधर्म की आम्नाय है।

यहाँ कोई कहे कि इन बातों का विचार किए बिना ही चाण्डाल ने भी तो प्रतिज्ञा ले ली थी। पण्डितजी कहते हैं कि उसने मरणपर्यन्त निभाई भी तो थी। 'कितनी भी विकट परिस्थिति हो; परन्तु प्रतिज्ञा नहीं छोडूँगा' – ऐसा विचार कर प्रतिज्ञा ली थी।

कितने ही जीव दसलक्षण पर्व में तो बाहर के खाने का, जमीकंदादि का त्याग करते हैं। फिर ११वे दिन आलु आदि पर ऐसे टूट पड़ते हैं, जैसे बहुत दिनों से किसी नाले में रुका हुआ पानी कचरा हट जाने के बाद बहता है। उन्हें कुछ विचार ही नहीं है।

इसी तरह कुछ लोग किसी दसलक्षण पर्व में तो दसों दिन उपवास करते हैं और किसी दसलक्षण में कुछ भी खाते-पीते रहते हैं, किसी धार्मिक आयोजन में तो बहुत दान देते हैं और किसी में बिल्कुल भी नहीं देते। तथा कितने ही जीव एक ओर तो स्त्री सेवनादि का त्याग करते हैं और दूसरी ओर खोटे व्यापारादि के कार्यों में प्रवर्तते हैं। जीवन में कोई संतुलन ही नहीं है। जैसे – कोई पुरूष एक वस्त्र तो १५००० का पहने और दूसरा वस्त्र १५० का पहने तो हँसी का ही पात्र बनता है। उसीप्रकार कभी तो बहुत क्रिया पाले और कभी थोड़ी भी न करे तो हँसी का ही पात्र होगा। यदि इसके धर्मबुद्धि होती तो सभी पर्व में संयमादि धारण करता सभी आयोजनों में दानादि देता और सभी लोकनिंद्य कार्य का त्याग करता।

सच्चे धर्म की तो यह आम्नाय है कि जितने रागादि दूर हुए हों उसके अनुसार जिस पद में जो धर्मक्रिया संभव हो वह सब अंगीकार करे। यदि अल्प राग मिटा हो तो निचले पद में ही प्रवर्तन करे; परन्तु उच्चपद धारण करके नीची क्रिया न करे। **(क्रमशः)**

देश के विभिन्न नगरों में....

अष्टानिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

गत अंक में जबलपुर आदि 15 स्थानों पर आयोजित अष्टाह्निका महापर्व के कार्यक्रमों के समाचार प्रकाशित किए जा चुके है, शेष समाचार निम्न प्रकार हैं -

(16) देवलाली : यहाँ पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में नियमसार महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, बाल ब्र. मनोजजी जबलपुर एवं पण्डित विनोदजी शास्त्री विदिशा के व्याख्यानों का लाभ मिला। विधि-विधान के कार्य पण्डित मुकेशजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित उर्विषजी शास्त्री ने किए।

(16) चैतन्यधाम : यहाँ अष्टानिका महापर्व के अवसर पर जिनेन्द्र प्रक्षाल, श्री नंदीश्वर विधान, गुरूदेवश्री के सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त पण्डित दीपकभाई कोटडीया, पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला। समारोह में श्री अमृतलाल चुन्नीलालजी महेता, श्री अनिलभाई ताराचन्दजी गांधी, श्री राजुभाई वाडीलालजी शाह, प्रतीकभाई चंद्रकांतजी शाह का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

(17) सोनागिर : यहाँ श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट द्वारा सिद्धचक्र महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित अशोकजी गोयल शास्त्री दिल्ली, पण्डित सुकमालजी शास्त्री गुना, पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री लुकवासा, पण्डित सुबोधजी सिवनी, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, पण्डित केशरीमलजी, पण्डित जीवेशजी शास्त्री एवं श्री वसंतजी वडजात्या का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

(18) दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केंद्र में श्री गणधरवलय मंडल विधान का भव्य आयोजन स्व. श्री विमलकुमारजी दिल्ली की पुण्य स्मृति में किया गया। इस विधान में पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री के 24 तीर्थंकरों के जीवन पर आधारित प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. नितेशजी दुबई एवं पण्डित सुरेन्द्रजी इंदौर के व्याख्यानों का लाभ मिला। वीरशासन जयंती के अवसर पर पण्डित रत्नेशजी ज्ञानोदय के सान्निध्य में आत्मार्थी कन्याओं द्वारा गोष्ठी आयोजित की गई।

(19) मकरोनिया (सागर) : यहाँ श्री षट्खंडागम विधान सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य जयपुर के प्रातः षट्खंडागम ग्रंथ पर, दोपहर में श्रुतस्कंध के स्वरूप पर एवं रात्रि में समयसार ग्रंथ पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य पण्डित आकाशजी जैन कोटा के निर्देशन में हुआ।

द्वि-दिवसीय सम्मान एवं संगोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर : यहाँ दिनांक १७-१८ जुलाई २०२२ को ऑनलाइन माध्यम से '**जैन शोध : दशा एवं दिशा**' विषय पर संगोष्ठी एवं प्रो. डॉ. जिनेन्द्रजी उदयपुर के सेवानिवृत्ति सम्मान सम्पन्न हुआ।

१७ जुलाई को आयोजित प्रथम सत्र के अध्यक्ष डॉ. प्रेमसुमनजी उदयपुर, मुख्य अतिथि डॉ. ऋषभचन्दजी फौजदार, विशिष्ट अतिथि डॉ. अशोककुमारजी बनारस, डॉ. अनुपमजी इन्दौर, डॉ. जिनेन्दजी उदयपुर, डॉ. लोकेशजी अहमदाबाद, डॉ. राकेशजी जैन नागपुर के अतिरिक्त पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई, डॉ. संजीवकुमारजी भोपाल, पण्डित संयमजी नागपुर, डॉ. संजयजी दौसा, डॉ. लोकेशजी अहमदाबाद, डॉ. राकेशजी नागपुर आदि उपस्थित रहे।

१८ जुलाई को आयोजित द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, मुख्य अतिथि श्री सुरेशचन्दजी IAS भोपाल, विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋषभचन्दजी फौजदार के अतिरिक्त डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. अनिलजी जयपुर, डॉ. सुमतजी उदयपुर आदि उपस्थित रहे।

इस अवसर पर भ. महावीर दिग. जैन विद्वत् समिति एवं सर्वोदय जैन टीचर फाऊंडेशन द्वारा प्रो. डॉ. जिनेन्द्रजी उदयपुर का सेवानिवृत्त होने पर तिलक, माला व प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मान किया गया।

आभार प्रदर्शन डॉ. महेन्द्रकुमारजी मुकुर मुम्बई ने एवं कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अरविन्दकुमारजी जैन जयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी जैन उदयपुर, डॉ. सुमतजी जैन उदयपुर ने किया।

जैन न्याय पर प्रकाशित हुई एक पठनीय कृति

भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली से अभी-अभी जैन न्याय की एक 'जैन-न्याय-प्रदीपिका' नामक महत्त्वपूर्ण कृति प्रकाशित होकर आई है। डॉ. वीरसागरजी शास्त्री द्वारा लिखित इस कृति में उनके जैन न्याय से सम्बन्धित ४८ लेखों का संग्रह है। जैसे कि - जैन न्याय का प्राथमिक परिचय, न्यायशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता, न्यायशास्त्र की दैनिक जीवन में उपयोगिता, मिथ्यात्व के नाश में न्यायशास्त्र की भूमिका, सर्वज्ञसिद्धि, अनेकांत-स्याद्वाद, प्रमेय का स्वरूप, हेतु और हेत्वाभास, कारण-कार्य व्यवस्था, निक्षेप विमर्श, जैन न्याय का संक्षिप्त लक्षणकोश, शब्दकोश आदि।

जैन न्याय प्रायः बहुत कठिन और नीरस माना जाता है; परन्तु इस कृति में उसे बहुत ही सरल और सरस शैली में प्रस्तुत किया गया है। न्यायविद्या एक अत्यंत प्रयोजनभूत और उत्कृष्ट विद्या है। २८८ पृष्ठ की इस कृति का मूल्य ३३५ रुपये रखा गया है। प्राप्ति हेतु सम्पर्क - ९८६८८८८६०७

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन?

सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर समाज के तत्त्वजिज्ञासु जीवों द्वारा प्राप्त आमंत्रणों के आधार पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। दिनांक २९ जुलाई २०२२ तक प्राप्त जानकारी के अनुसार निर्धारित सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

विशेष विद्वान – (1) डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर : जयपुर, **(2) बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन :** सोनागिर, **(3) बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना :** सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखरजी, **(4) पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन :** उज्जैन, **(5) बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद :** दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट), **(6) ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना :** बैंगलोर, **(7) पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** हिम्मतनगर, **(8) पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली :** अशोक नगर, **(9) पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत :** दिल्ली (विश्वास नगर), **(10) डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर :** नागपुर, **(11) डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर :** औरंगाबाद, **(12) पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन :** मोरवी, **(13) पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट :** राजकोट, **(14) पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर :** विभिन्न स्थान, **(15) पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड :** वस्त्रापुर (अहमदाबाद), **(16) डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर :** भोपाल (चौक)।

विदेश – (1) पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद : लन्दन, **(2) पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा :** शिकागो, **(3) पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री जयपुर :** अमेरिका (मोना), **(4) पण्डित नीलेशभाई मुम्बई :** नौरोबी, **(5) पण्डित नितेशजी शास्त्री बासवाँड़ा :** दुबई।

मध्यप्रदेश प्रान्त – (1) जबलपुर : पण्डित अभिषेकजी शास्त्री अहमदाबाद, **(2) इन्दौर (साधना नगर) :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, **(3) भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, **(4) बीना :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर,**(5) रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, **(6) विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री सोलापुर, **(7) इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित अनुभवजी कानपुर, **(8) उज्जैन (क्षीरसागर) :** पण्डित संजयजी शास्त्री गनोडा, **(9) गुना (वीतराग–विज्ञान) :** ब्र. धरणेन्द्रजी दिल्ली, **(10) भिण्ड (परमागम मन्दिर) :** डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री सिंघई जयपुर, **(11) टीकमगढ़ :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, **(12) ग्वालियर (फालका बाजार) :** पण्डित आकेशजी उभेगाँव, **(13) सागर (महावीर जिनालय) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, **(14) इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, **(15–16) खुरई :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सागर, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, **(17) होशंगाबाद (तारण समाज) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी कुंडा, **(18) भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित विनोदजी जैन गबेरा, **(19) गुना (महावीर जिनालय) :** ब्र. मनोजजी जबलपुर, **(20) राधौगढ़ :** पण्डित अमनजी शास्त्री आरोन, **(21) इंदौर (गांधीनगर) :** पण्डित विकासजी छाबड़ा इंदौर, **(22) बडनगर :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, मोरवी, **(23) मौ :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री सागर, **(24) छिन्दवाड़ा (गोलगंज) :** पण्डित अनुभवजी मंगलार्थी करेली, **(25) छिन्दवाड़ा (गांधी नगर) :** पण्डित पदमकुमारजी अजमेर इंदौर, **(26) सागर (तारण तरण) :** पण्डित अभिषेकजी मंगलार्थी उभेगाँव, **(27) शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, **(28) मन्दसौर (नई आबादी) :** पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, **(29) आरोन :** पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना, **(30) सिवनी :** पण्डित अंकितजी शास्त्री भगवाँ, **(31) इटारसी (तारण–तरण) :** पण्डित सचिनजी शास्त्री भोपाल, **(32) कटनी :** पण्डित राहुलजी शास्त्री मुंबई, **(33–34) भोपाल (ज्ञानोदय) :** पण्डित अमनजी शास्त्री, विदुषी श्रुतिजी शास्त्री दिल्ली, **(35–36) मुरार (ग्वालियर) :** पण्डित रजितजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित राहुलजी शास्त्री दमोह, **(37) विदिशा (अरिहंत विहार) :** ब्र. सुधाबहनजी उभेगांव, **(38) इंदौर (कालानी नगर) :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल, **(39) गंजबासौदा (तारण तरण) :** ब्र. मुक्तानंदजी, **(40) बरेली :** पण्डित ज्ञाताजी सिंघई सिवनी, **(41) पंधाना :** पण्डित कैलाशचंदजी शास्त्री बीकानेर, **(42) ग्वालियर (सोडा का कुआ) :** पण्डित अरुणकुमारजी मोदी सागर, **(43) जावरा :** पण्डित मंयकजी शास्त्री बण्डा, **(44–45) सागर (मकरोनिया) :** पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, विदुषी स्वस्ति सेठी जयपुर, **(46–47) सोनागिर :** डॉ. विनोदजी चिन्मय विदिशा, डॉ. मुकेशजी तन्मय विदिशा।

महाराष्ट्र प्रान्त – (1) मुम्बई (दादर) : पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, **(2) मुम्बई (बोरीवली) :** डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **(3) मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, **(4–5) मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित विवेकजी टाया, पण्डित अनिलजी शास्त्री हथाया, **(6) मुम्बई (भायंदर) :** पण्डित विक्रान्तजी पाटनी, झालरापाटन, **(7) मुम्बई (मलाड) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **(8) मुम्बई (दहीसर) :** पण्डित अविनाशजी वात्सल्य छिन्दवाडा, **(9) मुम्बई (वसई रोड) :** पण्डित कमलेशजी शास्त्री ग्वालियर, **(10) मुम्बई (एवरशाईनगर) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मुम्बई, **(11–15) गजपंथा :** विदुषी धवलश्री पाटील बेलगांव, पण्डित सचिनजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित शुभमजी शास्त्री उभेगाँव, पण्डित उज्जवलजी शास्त्री डसाला, पण्डित सुमेरचन्दजी बेलोकर मुम्बई, **(16) वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, **(17) कारंजा (लाड) :** पण्डित अनिलजी

इंजी. इन्दौर, **(18) कारंजा (वीरवाड़ी) :** पण्डित चिन्तामणीजी शास्त्री भूस, **(19–20) कारंजा (वीरवाड़ी) :** पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित जयजी शास्त्री मुलावकर, **(21) देवलाली :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, **(22–24) देवलाली (विधान हेतु) :** पण्डित दीपकजी धवल भोपाल, पण्डित उर्विशजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, **(25) देवलाली (मणिभवन) :** ब्र. वासंतीबेन मुम्बई, **(26) सेलू :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **(27) अकोला :** ब्र. अमितभैया विदिशा, **(28) मलकापुर :** पण्डित शुभमजी ज्ञानोदय, **(29–30) बाहुबली (कुंभोज) :** पण्डित विजयसैनजी पाटील, पण्डित नेमीनाथजी शास्त्री, **(31) पुणे (युवा संघ) :** पण्डित विवेकजी छिन्दवाडा, **(32) नातेपुते :** पण्डित मंथनजी शास्त्री मुम्बई, **(33) दुधगाँव :** पण्डित दीपकजी शास्त्री अथणे, **(34) देवलगांवराजा :** पण्डित प्रमोदजी मोदी सूरत, **(35) पंदरपुर :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, **(36) चिखली :** पण्डित आशुतोषजी शास्त्री आरोन, **(37) डासाला :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **(38) गजपंथा (विधान हेतु) :** पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, **(39–41) सोलापुर :** पण्डित प्रशांतजी मोटरे, पण्डित विजयजी कालेगोरे, पण्डित रवीन्द्रजी काले शास्त्री, **(42–43) हिंगोली :** पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित अमोलजी शास्त्री सिंघई, **(44) सोलापुर (आदिनाथ मंदिर) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, **(45–54) नागपुर (इतवारी) :** पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री, विदुषी प्रतीतिजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी शास्त्री, पण्डित श्रीसंतजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री, पण्डित मोहितजी शास्त्री, पण्डित अतिशयजी शास्त्री, **(55–57) औरंगाबाद :** पण्डित विवेकजी शास्त्री महाजन, पण्डित गुलाबचन्दजी शास्त्री बोरालकर, पण्डित संजयजी शास्त्री राऊत, **(58–60) सांगली :** पण्डित महावीरजी पाटील दानोली, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री कोलापुर, पण्डित नितिनजी कोठेकर।

राजस्थान प्रान्त – (1) कोटा (इन्द्र बिहार) पण्डित शशांकजी शास्त्री अमायन, **(2) कोटा (रामपुरा) :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, **(3) पिडावा :** पण्डित सुनीलजी देवरी, **(4) उदयपुर (सेक्टर–११) :** पण्डित निखिलजी शास्त्री भायंदर, **(5) उदयपुर (नेमीनगर) :** पण्डित गजेन्द्रकुमारजी शास्त्री, **(6) जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, **(7) भीलवाड़ा (शास्त्रीनगर) :** पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री मंगलायतन, **(8) बिजौलिया :** पण्डित सुरेन्द्रजी इन्दौर, **(9) देवली (चन्द्रप्रभ जिनालय – अग्रवाल समाज) :** पण्डित नेमचन्दजी शास्त्री खतोली, **(10) अजमेर (वैशाली नगर) :** पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, **(11) किशनगढ़ :** पण्डित संदेशजी शास्त्री दिल्ली।

उत्तरप्रदेश प्रान्त – (1) अलीगढ़ (मंगलायतन) : ब्र. कल्पनाबेनजी जयपुर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, **(2) मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, **(3) कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित महेशचन्दजी ग्वालियर, **(4) सहारनपुर :** पण्डित जयकुमारजी कोटा, **(5) रुड़की :** पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, **(6) खेकड़ा :** पण्डित निर्मलकुमारजी सिंघई सागर, **(7–8) महरौनी :** पण्डित नागेशजी पिडावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ़, **(9) ललितपुर (सीमन्धर जिनालय) :** विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर, ललितपुर **(10–11) (शीतलनाथ जिनालय) :** डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, पण्डित आराध्यजी टडैया मुम्बई, **(12) खतौली :** पण्डित संजयजी शास्त्री खानियांधाना, **(13) आगरा (टांसयमुना) :** पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, **(14) आगरा (अछनेरा) :** पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा।

गुजरात प्रान्त – (1) अहमदाबाद (नवरंगपुरा) : ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, **(2) अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, **(3) अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, **(4) अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित देवेन्द्रजी हिम्मतनगर, **(5) दाहोद :** पण्डित सुदीपकुमारजी उदयपुर, **(6) बड़ोदा :** पण्डित दीपकजी कोटडिया अहमदाबाद, **(7) वापी :** पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री खनियांधाना, **(8–10) अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** ब्र. सुनीलभैया शिवपुरी, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढ़ी, पण्डित मनीषजी सिद्धान्त खड़ैरी, **(11) अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, **(12–13) अहमदाबाद (नरोडा) :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रथमजी शास्त्री भिण्ड, **(14) अहमदाबाद (बहीमपुरा) :** पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, **(15) अहमदाबाद (ओढव) :** डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा, **(16) मोरवी :** पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन, **(17) सुरेन्द्र नगर :** पण्डित अनुभवजी मंगलार्थी जबलपुर।

अन्य प्रान्त – (1) बेलगांव : पण्डित जिनचन्दजी शास्त्री हेरले, **(2–7) पोन्नूर :** पण्डित विमलदादा झांझरी, ब्र. सुकुमालजी झांझरी, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, ब्र. पुष्पलताबेन, ब्र. समताबेन, ब्र. ज्ञानधाराबेन, **(8) सम्मेदशिखरजी (विधान हेतु) :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री रहली, **(9) कोलकाता :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खेरागढ़।

दिल्ली प्रान्त – (1–4) दिल्ली (अध्यात्म तीर्थ) : बाल ब्र. नन्हेभैया सागर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, ब्र. प्रतीतिबहन, ब्र. श्रद्धाबहन, **(5) दिल्ली (फरीदाबाद से १०) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी, **(6) दिल्ली (राजेन्द नगर) :** पण्डित संयमजी शास्त्री गुढ़ाचन्द्रजी, **(7) दिल्ली (मंटोला पहाडगंज) :** पण्डित सम्यकजी शास्त्री अमरमऊ, **(8) दिल्ली (रोहिणी से. १३) :** पण्डित भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा, **(9) दिल्ली (जनकपुरी बी–१) :** पण्डित अनिकेतजी शास्त्री भिण्ड, **(10) दिल्ली (उत्तमनगर) :** पण्डित अरिहन्तजी शास्त्री भिण्ड, **(11) दिल्ली (नांगलोई) :** पण्डित नितिनजी शास्त्री वडामलहरा, **(12) दिल्ली (दिल्ली केन्ट) :** पण्डित आप्तजी शास्त्री दमोह, **(13) दिल्ली (बिलौनी) :** पण्डित अश्विनजी नानावटी, **(14) दिल्ली (प्रहलाद नगर) :** पण्डित शशांकजी शास्त्री चंदेरी, **(15) दिल्ली (पाण्डव नगर) :** पण्डित प्रान्जलजी शास्त्री भोपाल, **(16) दिल्ली (पीरागढ़ी) :** पण्डित ध्रुवजी शास्त्री ज्ञानोदय।

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

भरत का अन्तर्द्वन्द्व

पहला अध्याय

(दोहा)

वीतरागता के धनी, सब जाने अरहन्त।
और अनन्तानन्दमय, सभी सिद्ध भगवन्त।।1।।

आचारज उवझाय अर, हैं जितने भी सन्त।
वन्दूँ बारम्बार मैं, आवे भव का अन्त।।2।।

भव–भव में ही भटकते, बीता काल अनन्त।
मन ही मन सोचें भरत, कैसे हो भव अन्त।।3।।

भरतराज दरबार में, बैठे थे सानन्द।
पूँछ रहे थे सभी से, कुशल क्षेम आनन्द।।4।।

प्रभो आपकी कृपा से, यत्र–तत्र–सर्वत्र।
कुशल क्षेम पूरी तरह, व्याप रही सर्वत्र।।5।।

मन्त्रीगण दे रहे थे, विगतवार सन्देश।
तभी अचानक सभा को, मिले तीन सन्देश।।6।।

(रेखता)

इधर आयुधशाला से अभी–अभी आया है इक सन्देश।
हुई है *चक्ररत्न* की प्राप्ति अरे रे सुनो सुनो भरतेश!।।
उधर अन्त:पुर से भी मिला अचानक एक सुखद सन्देश।
हुई है *पुत्ररत्न* की प्राप्ति हुआ सबको आनन्द विशेष।।7।।

इसी के बीच एक सन्देश देवतागण भी लाये हैं।
श्री वृषभेश बने *सर्वज्ञ* सभी मन में हरषाये हैं।।
चतुर्दिग् छाया है आनन्द अरे आनन्द और आनन्द।
समाया सभी मनों में आज अनन्तानन्द अनन्तानन्द।।8।।

अयोध्या की सब गलियों में अरे जब फैले ये सन्देश।
हुआ जन–जन को अति आनन्द सभी जन पुलकित हुये विशेष।।
अरे उल्लास भरे अत्यन्त घरों से निकल पड़े सब लोग।
और आपस में करते बात अरे देखो अद्भुत संयोग।।9।।

अरे कुछ समझ नहीं आता करें क्या सोच रहे थे लोग।
अरे इक साथ तीन सौभाग्य फले यह कैसा योगायोग।।
इसी को कहते हैं सब लोग अरे यह महापुण्य का योग।
बहुत कम मिलते ऐसे योग विविधविध सोच रहे थे लोग।।10।।

भरत ने दिया तभी आदेश चलो जिनवर के वंदन को।
बाद में देखेंगें क्या हुआ चलो पहले जिनदर्शन को।।
अरे जिनदर्शन की महिमा भरत के अन्तर में छाई।
यही कारण है कि यह बात अरे उनके मन में आई।।11।।

अरे रे पुत्ररत्न की बात अरे रे चक्ररत्न की बात।
नहीं आकर्षित कर पाई किन्तु जिनवर दर्शन की बात।।
प्रथमत: उनके मन आई और उनके चित को भायी।
यही है निर्मलता मन की जो उनके अन्तर में छाई।।12।।

सुआ–सूतक में तो सब लोग नहीं जाते जिनमन्दिर में।
भरत को क्यों विकल्प आया अरे जिनवर के दर्शन का।।
अरे सामान्यजनों को ही सुआ–सूतक लगते जानो।
सुआ–सूतक लगते हैं नहीं बड़े लोगों को – यह मानो।।13।।

जिनेन्द्र के दर्शन–पूजन किये विविध विध उत्सव किये अनेक।
लिया धर्मोपदेश का लाभ जगा अन्तर में भेद–विवेक।।
विविधविध अन्तर में उत्साह हृदय में उमड़ा भक्तिभाव।
और मनमोर नाचने लगा तथा वाणी में प्रगटे भाव।।14।।

अरे वाणी में प्रगटे भाव और वाणी में फूटे बोल।
हृदय में उछले भाव अनन्त अरे भक्ती के भाव अमोल।।
अरे भक्ती के भाव अमोल उन्होंने भक्ती की भरपूर।
अरे आँखों में आया पूर देखने लायक मुख का नूर।।15।।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

साथ ही महाविद्यालय के महत्त्व को बतलाते हुए सर्वज्ञ जैन गुढ़ाचन्द्रजी ने वक्तव्य एवं अरविंद जैन खड़ैरी, अंकित जैन कुटौरा व निवेश जैन दिल्ली ने कविता प्रस्तुत की।

रात्रि में ८:३० बजे महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा 'टोडरमल महाविद्यालय : एक अनोखी स्थापना' नामक नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसका लेखन समर्थ जैन हरदा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया।

टोडरमल महाविद्यालय के निर्देशक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमने महाविद्यालय के प्रारम्भ में जो रीति–नीति बनाईं थीं, वे आज भी कायम हैं। मुझे विश्वास है कि यदि हम इसी रीति–नीति से चलते रहे तो यह महाविद्यालय कम से कम १०० वर्ष तक संचालित होता रहेगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित अमनजी शास्त्री लोनी व शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें – www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें – www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अकर्तावाद संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित ऑनलाइन गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक १३ जुलाई से १७ जुलाई २०२२ तक अकर्तावाद विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई।

यह गोष्ठी तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के मंगल आशीष, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन एवं श्री अरुणकुमारजी मोदी परिवार मकरोनिया व पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट के विशेष सहयोग से सम्पन्न हुई।

पाँच सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा जैनदर्शन में अकर्तावाद, पांच समवाय एवं अकर्तावाद, कारण–कार्य एवं अकर्तावाद, चार अनुयोग एवं अकर्तावाद तथा अकर्तावाद का फल आदि विषयों पर गहन चर्चाएँ की गईं।

सत्रों की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ एवं बाल ब्र. अमितभैया विदिशा ने की। विशिष्ठ विद्वानों में डॉ. संजयजी दौसा, पण्डित सुकमालजी गुना, पण्डित संजयजी सेठी, डॉ. दीपकजी जयपुर, पण्डित ऋषभजी उस्मानपुर, पण्डित सोनूजी अहमदाबाद, पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, डॉ. सरसजी विदिशा, पण्डित गौरवजी इंदौर, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित राजेन्द्रजी मकरोनिया, पण्डित अखिलेशजी सागर, पण्डित पंकजजी खड़ैरी, पण्डित अंकुरजी भोपाल, पण्डित शुभमजी ज्ञानोदय, पण्डित जिनेशजी शेठ का समागम प्राप्त हुआ।

समस्त सत्रों में पण्डित अरुणकुमारजी मोदी द्वारा विद्वानों एवं सभासदों का आभार प्रदर्शन किया गया।

ज्ञातव्य है कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की प्रेरणा से आगामी गोष्ठी **'समाधि के सार'** विषय पर आयोजित की जाएगी। जो कि अष्टाह्निका महापर्व के पश्चात् संपन्न होगी।

वैराग्य समाचार

जयपुर निवासी **श्रीमान स्वरूपचन्दजी गंगवाल** का ८४ वर्ष की आयु में दिनांक २२ जुलाई २०२२ को शान्त परिणामों सहित देह–परिवर्तन हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप स्वाध्यायी विद्वान थे एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों का भरपूर लाभ लेते थे। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा वीतराग–विज्ञान हेतु ११००/– रूपये की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यावाद।

दिवंगत आत्मा शीघ्र अभ्युदय को प्राप्त करे – यही भावना है।

चतुर दिवसीय विधान एवं विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

फिरोजाबाद : यहाँ उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान लखनऊ, संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश सरकार के तत्त्वावधान में आचार्य कुन्दकुन्द सेवा समिति, फिरोजाबाद द्वारा श्री छदामीलाल दिगम्बर जैन मन्दिर में 14 से 17 जुलाई 2022 तक श्री चौसठ ऋद्धि विधान एवं अनेकान्त-स्याद्वाद विषय पर विद्वत् संगोष्ठी आयोजित हुई। विधान के समस्त कार्य बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी धवल व पण्डित दीपकजी धवल, भोपाल ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के प्रातः समयसार (ज्ञायकभाव प्रबोधनी टीका) एवं रात्रि में ध्यान का वास्तविक स्वरूप विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुए। प्रतिदिन प्रवचनोपरान्त दो-दो विद्वानों के अनेकान्त-स्याद्वाद विषय पर विशेष वक्तव्य हुए।

इस प्रसंग पर पण्डित प्रकाशजी दादा मैनपुरी, डॉ. अभयकुमारजी जैन लखनऊ, डॉ. राकेशजी सिंह, डॉ. योगेशजी शास्त्री, पण्डित अभिनवजी शास्त्री, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, पण्डित अजितजी जैन, पण्डित अनुराजजी शास्त्री आदि का समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम पण्डित नवीनजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ़, पण्डित सौरभजी शास्त्री व पण्डित विपिनजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुए।

ज्ञातव्य है कि वीरशासन जयंती के अवसर पर डॉ. गोधा द्वारा प्रासंगिक प्रवचन के अतिरिक्त दिव्यध्वनि, समवशरण रचना, इन्द्रसभा एवं बच्चों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए।

ज्यातिर्विद प्रकाशचन्दजी मैनपुरी का सम्मान

फिरोजाबाद : यहाँ 16 जुलाई को वयोवृद्ध विद्वान पण्डित प्रकाशचन्दजी सकारिया को जीवनपर्यंत ज्योतिष एवं जैन दर्शन के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में दी गई सेवाओं के लिए बृहद स्तर पर नागरिक सम्मान किया गया। यह सम्मान करहल, कुरावली, टूंडला, एत्मादपुर, शिकोहाबाद आदि ब्रज क्षेत्र के अनेक मण्डलों/समाजों द्वारा किया गया, जिसमें अनेक विद्वान एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। विगत ५०-६० वर्षों से जैन तिथिदर्पण आपके द्वारा ही तैयार किया जाता रहा है एवं पंचकल्याणकादि की तिथियाँ भी आपके द्वारा ही निकाली जाती हीं हैं।

अध्यात्मचक्रवर्ती की उपाधि से अलंकृत डॉ. संजीवजी गोधा

फिरोजाबाद : यहाँ 64 ऋद्धि विधान व विद्वत् संगोष्ठी के अन्तर्गत दिनांक 17 जुलाई 2022 को उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान लखनऊ, संस्कृति विभाग उत्तरप्रदेश सरकार के तत्त्वावधान में आचार्य कुन्दकुन्द सेवा समिति फिरोजाबाद, सकल दिगम्बर जैन समाज (फिरोजाबाद, मैनपुरी, करहल, कुरावली, टूंडला, एत्मादपुर, शिकोहाबाद, जसवंतनगर आदि बज्र क्षेत्र के अनेक समाजों) द्वारा चक्रवर्ती की भाँति वर्षभर देश-विदेश के विभिन्न खण्डों में अध्यात्मचक्र द्वारा एकछत्र शासन करने वाले विश्वभर में जिनधर्म की पताका फहराने वाले जिनवाणी माँ के

सच्चे सपूत युवा विद्वान **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर** को **अध्यात्म चक्रवर्ती** की उपाधि से अलंकृत करते हुए विविध संस्थाओं के माध्यम से उन्हें शॉल, श्रीफल एवं सम्मान प्रशस्ति प्रदान की गई। कार्यक्रम में श्री सनतजी जैन, श्री संजीवजी जैन गुड्डू, श्री संजीवजी जैन एडवोकेट, डॉ. अरिंजयजी जैन आगरा, डॉ. अभयकुमारजी जैन लखनऊ, डॉ. राकेशसिंहजी, सेठ महावीरजी जैन सहित अनेक गणमान्य एवं **समस्त विद्वत्जन** मौजूद थे। प्रशस्ति का वाचन पं. सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद ने एवं सभा का संचालन पं. नवीनजी शास्त्री ने किया। **- विपिन शास्त्री**

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन**द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जुलाई 2022

प्रति,